मृच्छकटिकम्

Name :- Savi Kumari
class :- B.A II year
Deptt :- Sanskrit

श्लोक सं० ४ - ऋग्वेदं सामवेदं गणितमथ कलां वैशिकीं हस्तिशिक्षां
ज्ञात्वा शर्वप्रसादात् व्यपगततिमिरे चक्षुषी चोपलभ्य।
राजानं वीक्ष्य पुत्रं परमसमुदयेनाश्वमेधेन चेष्ट्वा
लब्ध्वा चायुः शताब्दं दशदिनसहितं शूद्रकोऽग्निं प्रविष्टः॥

अर्थ :- ऋग्वेद, सामवेद, गणित, नृत्यगीतादिक चौंसठ कलाओं, व्यापार नियम एवं गजपालनादि विद्याओं में राजा शूद्रक पारङ्गत थे। भगवान शंकर की परम कृपा से इन्हें दिव्यदृष्टि प्राप्त थी। इन्होंने अश्वमेध यज्ञ भी किया था। अन्त में अपने पुत्र को राज्य देकर दश दिनाधिक पूरी सौ साल की लम्बी आयु का उपभोगकर इन्होंने अग्नि में प्रवेश किया था।

महाकवि शूद्रक मात्र संस्कृत काव्य जगत के ज्ञाता ही नहीं थे बल्कि विभिन्न विषयों — ऋग्वेद, सामवेद, गणित, नृत्यगीतादिक चौंसठ कलाओं आदि अनेक विषयों के विद्वान थे, जो एक व्यक्ति में होना अद्वितीय है। वे भगवान शंकर के पुजारी थे जिनके आशीर्वाद से उन्हें दिव्यदृष्टि प्राप्त थी। वे भविष्य की घटनाओं को पूर्व ही देख लेते थे। यही कारण है कि महाकवि शूद्रक सौ वर्ष और दस दिन की आयु तक जीवित थे।

प्रस्तुत श्लोक में स्रग्धरा छन्द है।

इष्ट्वा — यज् + क्त्वा
वैशिकीम — वेशेन जीवति जीविति, वेश + ठक्
प्रविष्टः — प्र + विश् + क्तः

Name:- Sonu Kumari
Class:- B.A. 4 year
Deptt:- Sanskrit

मृच्छकटिकम्

श्लोक सं. 5

समरव्यसनी प्रमादशून्यः ककुदो वेदविदां तपोधनश्च।
परवारणबाहुयुद्धलुब्धः क्षितिपालः किल शूद्रको बभूव॥

प्रस्तुत श्लोक में भी महाकवि शूद्रक जी की वीरता का यशोगान किया गया है —

अर्थ:- शुद्ध-प्रेमी, प्रमाद रहित, वेद के ज्ञाताओं में प्रवीण, तपस्वी, शत्रुओं के हाथियों के साथ बाहुयुद्ध (कुश्ती) करने का इच्छुक शूद्रक नाम का राजा हुआ।

महाकवि शूद्रक सर्वगुण सम्पन्न

व्याख्या - सभी विद्याओं में निपुण, अत्यन्त शक्तिशाली वीर, कुशल, पराक्रमी, तेजस्वी थे। वह युद्ध करने में सर्वथा आगे रहा करते उन्हें अपनी शक्ति और वैभव पर तनिक भी घमण्ड नहीं था बल्कि गर्व था, वैसे तो वह सभी विद्याओं के ज्ञाता थे परन्तु वेद के ज्ञाताओं में वह प्रवीण, निपुण थे। वह इतने शक्तिशाली थे कि शत्रुओं के हाथियों के साथ कुश्ती करने में भी पीछे नहीं हटते थे।

प्रस्तुत श्लोक में मालिनी छन्द है।

तपोधनः - तप एव धनं यस्य ([illegible]) तादृशः
प्रमादशून्यः - प्रमादेन शून्यः (तृतीया तत्पु॰)
बभूव - √भू + लिट् लकार प्र॰ पु॰ (एकव॰)